समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कक्षा - 7

हिंदी (पल्लव)

अध्याय – 14

आओ, स्कूल चलें

भाग – 1

मिताली कुमारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



पीपल के पेड़ के नीचे चौपाल पर पंचायत बैठी थी। पहले गाँव में स्कूल नहीं था। पंचायत की कोशिश का नतीजा है कि यहाँ अब स्कूल हो गया। गाँव के लोग बहुत खुश थे। जोश में तो स्कूल में बहुत सारे बच्चे पढ़ने आए। पर अब आधे से भी ज्यादा बच्चे गायब रहने लगे हैं। पंचायत इसी बात को लेकर चिंतित थी। उसी पर अब चर्चा हो रही थी। उन लोगों ने मास्टरजी से सलाह लेने का निश्चय किया।

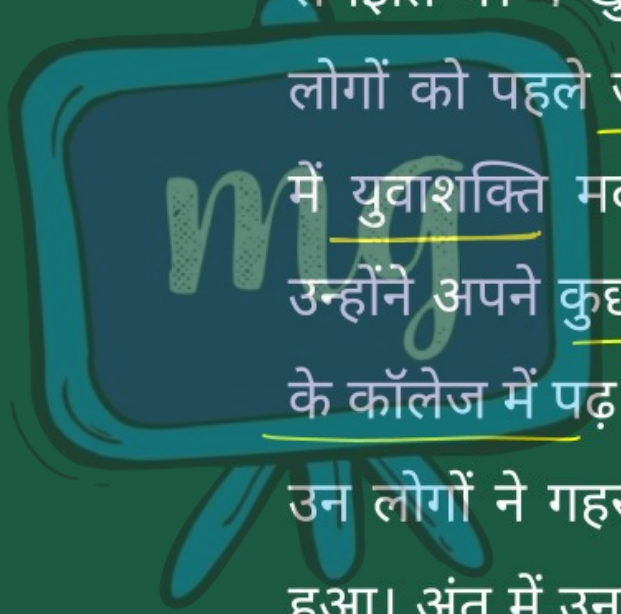

मास्टरजी पंचायत की चिंता का कारण अच्छी तरह समझते थे। वे खुद भी तो परेशान थे। उन्होंने सोचा लोगों को पहले जागरूक बनाना होगा। इस मामले में युवाशक्ति मदद कर सकती है। यही सोचकर उन्होंने अपने कुछ पुराने विद्यार्थी, जो अब नजदीक के कॉलेज में पढ़ रहे हैं, उनसे मिले। इस समस्या पर उन लोगों ने गहराई से सोचा, काफी विचार-विमर्श हुआ। अंत में उन लोगों ने लोगों में जागरूकता लाने के लिए एक नुक्कड़ नाटक खेलने का निश्चय किया।

रविवार का दिन था। बाजार में लोगों की बहुत भीड़ थी। युवक-युवतियों का एक दल वहाँ आ पहुँचा और थोड़ी-सी खुली जगह देखकर वहीं जम गया। एक ने नारा लगाया- आइए, आइए, अपने अधिकारों के बारे में जानिए, इनका भरपूर लाभ उठाइए।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

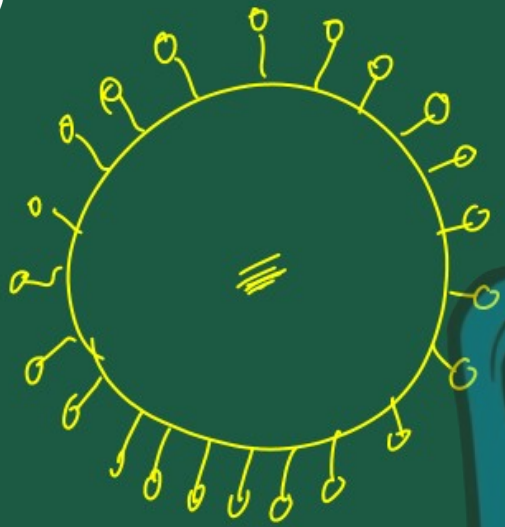

फिर टोली के सब लोग मिलकर घूम-घूमकर गाने लगे :

पढ़ना-लिखना है सब का अधिकार।

पढ़-लिख कर बन जाएँ सब होशियार ।।

धीरे-धीरे उनके पास लोगों की भीड़ जम गई। दल के नेता ने उपस्थित जनता से गोल घेरा बनाकर बीच में कुछ खाली जगह छोड़कर खड़े होने के लिए आह्वान किया। फिर उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा- "यहाँ उपस्थित देवियो और सज्जनो, भाइयो, बहनो और मित्रो, आप सबको हमारा प्रणाम। आज हम यहाँ आपके समक्ष एक नाटक खेलने आए हैं।

आपलोग इसे देखें और बच्चों को पढ़ने-लिखने का जो अधिकार मिलना चाहिए, सरकार उन्हें क्या-क्या सुविधाएँ देती है, पढ़ाई-लिखाई में अब पहले से क्या-क्या परिवर्तन हो चुके हैं- इन बातों पर गौर करें। हम अपनी भूल-चूक के लिए पहले ही क्षमा याचना करते हैं और आपलोगों के सुझावों की प्रार्थना करते हैं।" इसके बाद नुक्कड़ नाटक की शुरूआत हो गई।

(एक तरफ से मोहनलाल और दूसरी तरफ से गोपाल बाबू आते हैं।)

मोहनलाल : जय राम जी की, गोपाल बाबू। कहाँ से आए?

गोपाल बाबू : जय राम जी की मोहनलाल जी। जरा बिटवा को देख आया एक बार।

मोहनलाल : बिटवा को? क्या हुआ उसे?

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

गोपाल बाबू : नहीं, नहीं। उसे कुछ नहीं हुआ। शहर के एक मोटर गैरेज में रखकर आया था न। काम भी सीखेगा, दो पैसा भी कमाएगा। बहुत दिन हो गए। एक बार देख आया।

मोहनलाल : तो क्या स्कूल से छुड़वा दिया उसे ?

गोपाल बाबू : हाँ, क्या होगा स्कूल जाकर ? कलक्टर बनना थोड़े ही है। वहीं गैरेज में काम करेगा तो एक दिन अच्छा मैकेनिक बनेगा।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मोहनलाल : पर...

गोपाल बाबू : पर क्या ? कितने ही बच्चे स्कूल छोड़कर काम कर लगे हुए हैं..... देखिए न, अब्बू मियाँ की दुकान पर वह करीम मुर्गी बेच रहा है। उधर देखिए, रासबिहारी बाबू की किराने की दुकान पर वह रमेश, फिर सरदारजी की चाय की दुकान पर बलवीर.....

मूल्यांकन



1 | पंचायत की कोशिश का नतीजा है कि यहाँ अब स्कूल हो गया। ।

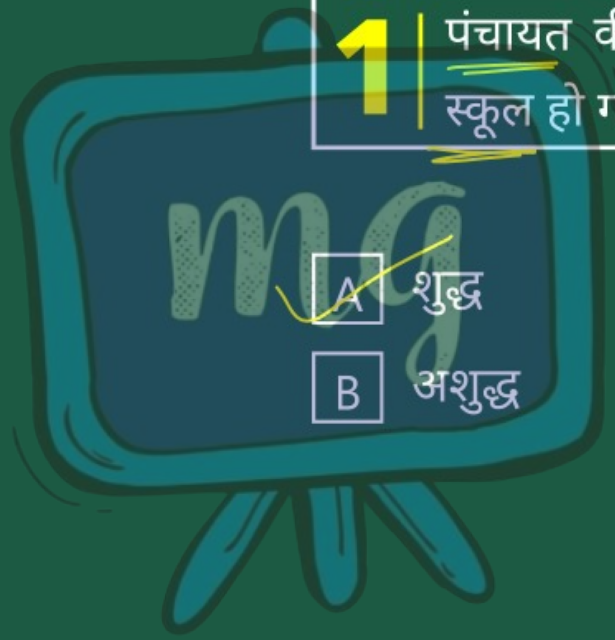

A शुद्ध

B अशुद्ध

मूल्यांकन



2 हाँ, क्या होगा स्कूल जाकर ? कलक्टर बनना थोड़े ही है। वहीं गैरेज में काम करेगा तो एक दिन अच्छा मैकेनिक बनेगा। - गोपाल बाबू ने कहा था ।

A शुद्ध

B अशुद्ध

मूल्यांकन



3 नुक्कड़ नाटक का मतलव है मंच पे किया जाने वाला नाटक ।

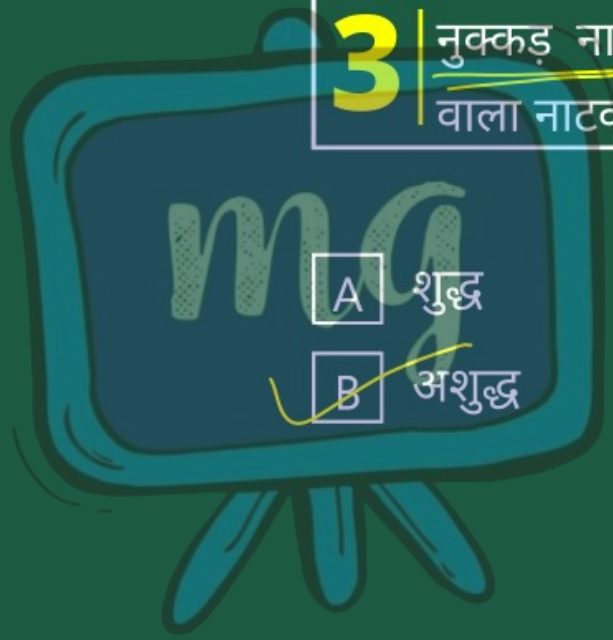

A शुद्ध

B अशुद्ध